Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 1

– Save This Page as a PDF–

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६

खोदाई: कारागार ने योचनान के संदेह को कैसे जन्म दिया होगा? क्या यीशु यूहन्ना को वादों के साथ उत्तर देता है या सबूत के साथ? क्यों? यूहन्ना, जो तनख को अच्छी तरह जानता था, येशुआ के उत्तर का उत्तर कैसे दे सकता है (देखें यशायाह ३५:५-६, ६१:१)? प्रभु योचनन को क्या प्रोत्साहन देते हैं? अच्छा चरवाहा बपतिस्मा देने वाला के बारे में क्या कहता है? यूहन्ना ने भविष्यवाणी कैसे पूरी की? उसने किस प्रकार विश्वास प्रदर्शित किया? नई वाचा का विश्वासि किस प्रकार योचनान से बड़ा है? मसीहा ने बच्चों की तुलना किससे की? क्यों?

चिंतन: जब आप जानते थे कि येशुआ ही आपके लिए है तो आप अपनी आध्यात्मिक तीर्थयात्रा में उस स्थान पर कब आए थे? आपको यह समझ कैसे आई? इससे क्या फर्क पड़ा? निराशा और संदेह के उस दौर में, आपके साहस और विश्वास को सबसे अधिक नवीनीकृत क्या करता है? आप किस विशिष्ट तरीके से अपने चर्च या मसीहाई आराधनालय नेतृत्व में किसी को प्रोत्साहित कर सकते हैं? आपके परिवार में? आपके दोस्तों के बीच? यदि आप यीशु से उस निर्णय के बारे में पूछ सकें जिसका आप सामना कर रहे हैं, तो वह क्या होगा?

यूहन्ना दो वर्षों तक माचेरस की कालकोठरी में रहा था। पुराना किला मृत सागर के उत्तरी छोर से पाँच मील पूर्व और पंद्रह मील दक्षिण में एक गर्म और उजाड़ क्षेत्र में स्थित था। इससे अधिक सुदूर या उजाड़ किसी स्थान की कल्पना करना कठिन है, जो रेगिस्तान के बीच में, किसी पहाड़ की चोटी पर स्थित हो। सीलन भरी कोशिकाएँ चट्टानी पहाड़ी में खुदी हुई हैं, और वास्तव में, उनमें से कुछ गुफाओं से ज्यादा कुछ नहीं हैं। फर्श, छत और दीवारें अभेद्य चट्टान हैं। उसकी कोठरी में खिड़कियाँ नहीं हैं; एकमात्र रोशनी मोटे लकड़ी के दरवाज़े में छोटी-छोटी दरारों से होकर आती है। यह एकांत और मौन, नमी और ठंड का स्थान है, जहां जमीन पर महीने-दर-महीने सोने के बाद आशा बनाए रखना मुश्किल होता है और जहां किसी की त्वचा सूरज की रोशनी की गर्मी महसूस न करने से पीली हो जाती है। कारागार का जीवन नरक यूहन्ना के मन में प्रार्थना कर रहा था और उसे संदेह होने लगा कि क्या येशुआ वास्तव में मसीहा था।

यूहन्ना के अपने शिष्य यीशु की गतिविधियों के बारे में उसे बता रहे थे। उन्होंने विसर्जनकारी को बताया कि महासभा और फरीसी मसीह के संदेश पर अच्छी प्रतिक्रिया

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 2

नहीं दे रहे थे। इतना ही नहीं, यूहन्ना (प्रेरितों की तरह) को यह समझ में नहीं आया कि यीशु पहले फसह के मेम्ना के रूप में बलि देने के लिए आएंगे, और फिर यहूदा के गोत्र के शेर के रूप में शासन करने के लिए आएंगे (प्रकाशितवाक्य ५:५)। वह पहले येशुआ बेन जोसेफ के रूप में आएंगे, फिर बाद में येशुआ बेन डेविड के रूप में लौटेंगे। अपने समय के कई अन्य पारंपरिक यहूदियों की तरह, उन्होंने शायद उम्मीद की थी कि मेशियाक तुरंत इज़राइल को वादा किया गया छुटकारा दिलाएगा। तो इन नकारात्मक परिस्थितियों से, और इस तथ्य से कि यूहन्ना काफी समय से कारागार में था, उसे मसीह के दावों की वास्तविकता के बारे में संदेह होने लगा।



यीशु द्वारा तुरंत मसीहा साम्राज्य की शुरुआत
नहीं करने और इतने तीव्र विरोध के साथ, यह समझ में आता है कि योचनान को भी कुछ संदेह कैसे हो सकता है। जब यूहन्ना, जो कारागार में था, ने मसीहा के कार्यों के बारे में सुना, तो उसने अपने दो शिष्यों को उससे पूछने के लिए भेजा, “क्या आप ही अपेक्षित हैं, या हमें किसी और की प्रतीक्षा करनी चाहिए” (मत्ती ११:२-३; लूका) ७:१८-२० एनएएसबी)? ब्रांच, बेन डेविड, राजाओं के राजा और अन्य उपाधियों के साथ, अपेक्षित व्यक्ति मेशियाच का एक सामान्य नाम था। येशुआ के समय का हर यहूदी जानता था कि यह पूछना कि क्या वह अपेक्षित व्यक्ति था, यह पूछना था कि क्या वह मसीहा था। यूहन्ना ने पहले ही यीशु को मसीहा के रूप में घोषित कर दिया था, और उसे परमेश्वर के मेम्ना के रूप में संबोधित किया था, उसे जॉर्डन नदी में बपतिस्मा दिया था, और पूरी विनम्रता से घोषणा की थी: उसे महान बनना चाहिए; मुझे कम होना चाहिए (यूहन्ना ३:३०)। लेकिन घटनाओं (या उनकी कमी) के कारण उसके मन या भावनाओं के कारण उसके विश्वास पर संदेह के बादल छा गए। हेराल्ड जानकारी नहीं, बल्कि पुष्टि मांग रहा था। उसने विश्वास किया, परन्तु उसका विश्वास कमजोर हो गया था। यूहन्ना अपने शिष्यों के माध्यम से यीशु के पास आए और कहा, उस लड़के के पिता की तरह, जीवन के राजकुमार ने एक बुरी आत्मा से शुद्ध किया: मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास पर काबू पाने में मेरी मदद करें (मरकुस ९:२४)।

यूहन्ना के अनुभव में, और उसके बाद अनगिनत विश्वासियों के अनुभव में, संदेह को घबराहट या भ्रम के रूप में बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है। उसका संदेह विश्वासि का संदेह था। वह परमेश्वर के वचन की सत्यता पर सवाल नहीं उठा रहा था

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 3

जैसा कि उसे तानाख में या येशुआ के बपतिस्मा में बताया गया था। बल्कि, वह उन सच्चाइयों की अपनी समझ के बारे में अनिश्चित था। संदेह के लगभग सभी सुसमाचार संदर्भ अविश्वासियों के बजाय विश्वासियों से संबंधित हैं; और योचनान ने मसीह की पहचान के संबंध में जिस प्रकार का प्रश्न उठाया वह केवल एक विश्वासि के जीवन में ही हो सकता है। संक्रमणकालीन समय में, ब्रिट चादाशाह के लिखित रहस्योद्घाटन से पहले, कई चीजें थीं जो अस्पष्ट लगती थीं और स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी।

यह हमारे लिए आश्वस्त होना चाहिए कि यूहन्ना की आध्यात्मिक विशिष्टता और प्रतिभा वाला एक व्यक्ति भी संदेह और भ्रम का विषय था। योचनान की स्थिति से हम देख सकते हैं कि जिन चार कारणों के कारण उसे संदेह हुआ, वही कारण हमें भी संदेह का कारण बन सकते हैं।

संदेह का पहला कारण कठिन परिस्थितियाँ हैं। मानवीय रूप से कहें तो योचनान बपतिस्मा देने वाला का करियर आपदा में समाप्त हो गया। वह साहसी, पवित्र, निष्ठावान, निस्वार्थ और ईश्वर की सेवा में समर्पित था। उसने बिल्कुल वही किया जो प्रभु ने उससे करने को कहा था। वह जन्म से ही रुआच से भरा हुआ था और उसने अपना पूरा जीवन नाज़री प्रतिज्ञा के तहत बिताया था। लेकिन अब वह इस आश्चर्य से खुद को रोक नहीं सका कि क्या कारागार, शर्म, शारीरिक पीड़ा और अकेलापन उसके पुरस्कार थे। यूहन्ना तानाख को अच्छी तरह से जानता था, लेकिन जब उसे अपने विचारों के साथ अकेला छोड़ दिया गया, तो उस धुंधली कालकोठरी में भयानक सवाल खड़े हो गए। दीवारों से बाहर निकलने वाले साँपों की तरह, वे खुल जाते थे और भयानक फुसफुसाहट के साथ अपना सिर उठाते थे। यह सोचना उनके लिए बेहद निराशाजनक रहा होगा कि जिस एकमात्र उद्देश्य के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था वह असफल हो गया।

जब एक विश्वासि ने कई वर्षों तक ईमानदारी से और बलिदानपूर्वक मसीह की सेवा की है और फिर त्रासदी का अनुभव करता है, शायद त्रासदियों की एक श्रृंखला भी, तो ईश्वर के प्रेम और न्याय के बारे में आश्चर्य न करना मुश्किल है। जब कोई बच्चा मृत्यु या अविश्वास के कारण खो जाता है, पति या पत्नी मर जाते हैं या चले जाते हैं, किसी प्रियजन को कैंसर हो जाता है, तो हम यह पूछने के लिए प्रलोभित होते हैं, “प्रभु, अब आप कहाँ हैं जब मुझे वास्तव में आपकी आवश्यकता है? आपने मेरे साथ ऐसा क्यों होने दिया? आप मदद क्यों नहीं करते?” लेकिन अगर हम ऐसे विचारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो विरोधी उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बताता है और उनका उपयोग यहोवा में हमारे विश्वास और भरोसे को कम करने के लिए करने की कोशिश करता है। सिवाय इसके कि जब हम स्वेच्छा से पाप करते रहते हैं, हम कभी भी परमेश्वर की अच्छाई और सच्चाई पर संदेह करने और शैतान के झूठ पर विश्वास करने के प्रति इतने संवेदनशील नहीं होते हैं जितना कि जब हम पीड़ित होते हैं। कठिन परिस्थितियाँ कष्टदायक और कठिन होती हैं, लेकिन हमारी प्रतिक्रिया यूहन्ना की तरह ही होनी चाहिए – प्रभु के पास जाना और उसे शांत करने या संदेह करने के लिए कहना (याकूब १:२-१२)।

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 4

भ्रम का दूसरा कारण अधूरा रहस्योद्घाटन है। हालाँकि यूहन्ना ने मसीहा के कार्यों के बारे में सुना था, लेकिन उसकी जानकारी पुरानी थी और पूरी नहीं थी। वह एक वर्ष तक कारागार में रहा था; लेकिन जब यीशु उपदेश दे रहे थे, तब भी उनके बपतिस्मे के बाद योचानान का उनसे कोई सीधा संपर्क नहीं था। यदि येशुआ के अपने अनुयायी उसे समझने में विफल रहे और तीन साल तक उसके साथ रहने के बाद थोड़ा विश्वास प्रदर्शित किया, तो यह समझना आसान है कि यूहन्ना को भी कैसे संदेह हो सकता है। तानाख के भविष्यवक्ताओं की तरह, अग्रदूत को मसीह के बारे में पूर्ण सत्य का अनुभव नहीं था जिसे घोषित करने के लिए उसे भेजा गया था (प्रथम पतरस १:१०-११)। यूहन्ना के शिष्यों ने जो जानकारी उसके पास लायी वह अभी भी प्रत्यक्ष नहीं थी।

आज भी कई विश्वासी अधूरी जानकारी के कारण ईश्वर के बारे में कुछ सच्चाइयों पर संदेह करते हैं, क्योंकि उनके पास उसके वचन का अपर्याप्त ज्ञान या समझ है। जो विश्वासि धर्मग्रंथ में डूबा हुआ है, उसके पास ठोकर खाने का कोई कारण नहीं है। जब परमेश्वर को अपने वचन के माध्यम से बोलने की अनुमति दी जाती है, तो संदेह अंधेरे में धुंध की तरह गायब हो जाता है, जैसे सूरज की रोशनी में धुंध गायब हो जाती है। यीशु ने एम्मॉस रोड पर दो शिष्यों के संदेह का जवाब उन्हें यह समझाकर दिया कि सभी धर्मग्रंथों में उनके बारे में क्या कहा गया है (लूका २४:२५-३२)। हम सभी को संदेह से बचाने और भ्रम आने पर उसे दूर करने के लिए उसके वचन की निरंतर सत्यता की आवश्यकता है। बिरीया के लोग नेकदिल थे और उन्होंने संदेश को बड़ी उत्सुकता से प्राप्त किया क्योंकि वे यह देखने के लिए प्रतिदिन पवित्रशास्त्र की जांच करते थे कि पॉल ने जो कहा वह सच है या नहीं (प्रेरितों १७:११)।

भ्रम का तीसरा स्रोत सांसारिक प्रभाव है। अधिकांश यहूदियों को उम्मीद थी कि मसीहा इसराइल को उसके बंधन से मुक्त करेगा, जो उस समय रोम के अधीन था। वह स्पष्ट रूप से बुतपरस्त, अन्यायी और क्रूर रोमनों से निपटे बिना न्याय और धार्मिकता का अपना साम्राज्य स्थापित नहीं कर सका। हालाँकि, यीशु ने शब्दों या कार्यों से रोम का विरोध करने के लिए कुछ नहीं किया था। येशुआ के अपने प्रेरितों में भी ऐसी ही कुछ ग़लतफ़हमियाँ थीं। उन्हें गुरु के बारे में लगातार संदेह रहता था क्योंकि वह उनके पूर्वकल्पित विचारों में फिट नहीं बैठते थे। उसके पुनरुत्थान के बाद भी उन्हें उम्मीद थी कि वह अपना सांसारिक राज्य स्थापित करेगा (प्रेरितों १:६)। वे सभी उस चीज़ का शिकार हुए थे जो उनके आस-पास के लोगों ने सोचा था कि उन्हें ऐसा होना चाहिए था।

आज लोग, जिनमें कुछ विश्वासी भी शामिल हैं, इसी कारण से परमेश्वर की योजना के बारे में संदेह करते हैं और भ्रमित हैं। उनके दिमाग अपने आस-पास के लोगों के विचारों से इतने भरे हुए हैं कि वे यहोवा की योजना को समझने में विफल रहते हैं। हम लगातार लोगों को यह पूछते हुए सुनते हैं, “यदि ईसा मसीह सभी से इतना प्यार करते हैं, तो बच्चे क्यों मरते हैं और लोग भूखे क्यों मरते हैं, बीमार होते हैं और

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 5

अपंग हो जाते हैं?” यदि ईश्वर न्याय का देवता है, तो संसार में इतना भ्रष्टाचार और अन्याय क्यों है? इतने सारे अच्छे लोगों के लिए यह इतना बुरा क्यों है और इतने सारे बुरे लोगों के लिए यह इतना अच्छा क्यों है? यदि ईश्वर इतना प्यारा और दयालु है, तो वह लोगों को नरक में क्यों भेजता है? यदि ईश्वर इतना शक्तिशाली है और झूठे धर्म इतने बुरे हैं, तो वह उन धोखेबाजों का सफाया क्यों नहीं कर देता?” चूँकि परमेश्वर उनके पूर्वकल्पित विचारों में फिट नहीं बैठते कि उन्हें कैसा होना चाहिए, लोग भ्रमित हैं, कई बार क्रोधित होते हैं, और कभी-कभी निन्दा भी करते हैं।

संदेह की चौथी जड़ है अधूरी उम्मीदें। तथ्य यह है कि योचनान ने अपने शिष्यों को यह पूछने का निर्देश दिया, “या हमें किसी और की तलाश करनी चाहिए?” ऐसा प्रतीत होता है कि मसीहा के बारे में यूहन्ना की अपेक्षाएँ पूरी नहीं हुई थीं। रुआच के निर्देशन में, योचनान ने साहसपूर्वक घोषणा की थी: मैं तुम्हें पश्चाताप के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूं। परन्तु मेरे बाद वह आता है जो मुझ से भी अधिक सामर्थी है, और मैं उसकी जूतियाँ उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका फटकने वाला कांटा उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान साफ करेगा, अपना गेहूँ खलिहान में इकट्ठा करेगा और भूसी को कभी न बुझने वाली आग में जला देगा (मत्ती ३:११-१२)। यूहन्ना जानता था कि जो उसने उपदेश दिया वह सत्य है, और वह जानता था कि मसीह ही वह है जिसके विषय में उसने उपदेश दिया था; फिर भी यीशु ने उनमें से कुछ भी नहीं किया। उन्होंने कोई दैवीय हस्तक्षेप, कोई निर्णय और कोई न्याय का कार्यान्वयन नहीं देखा। यीशु ने धर्मियों का बदला नहीं लिया। उसने अपने आरोप लगाने वालों के ख़िलाफ़ अपना बचाव भी नहीं किया।

विश्वासियों के लिए यह समझना हमेशा कठिन रहा है कि क्यों प्रभु अपने इतने सारे बच्चों को कष्ट सहने देते हैं और इतने सारे दुष्ट, अधर्मी लोगों को समृद्ध होने की अनुमति क्यों देते हैं (भजन ३७ और ७३ देखें)। यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला के लिए विशेष रूप से कठिन था। एक बात के लिए, उन्हें धार्मिकता के प्रति गहरी भक्ति थी और पश्चाताप और न्याय का उपदेश देने के लिए यहोवा ने उन्हें बुलाया था। इससे भी अधिक, उन्हें उस प्रत्याशित व्यक्ति के आने की घोषणा करने के लिए बुलाया गया था जो उस निर्णय को क्रियान्वित करेगा – जिसके बारे में उन्होंने सोचा था कि मेशियाच के दृश्य में प्रकट होने के बाद, यदि तुरंत नहीं तो शीघ्र ही शुरू होगा। आज विश्वासी कभी-कभी प्रभु की आसन्न वापसी के बारे में उत्साहित हो जाते हैं; लेकिन जब कई साल बीत जाते हैं और वह नहीं आता है, तो उनकी आशा, उनके समर्पण के साथ, अक्सर ख़त्म हो जाती है। कुछ ठट्ठा करनेवाले तो यहाँ तक कहेंगे: उसके आने का वादा कहाँ है? क्योंकि जब से हमारे पुरखा मरे, तब से सब कुछ वैसा ही चल रहा है जैसा सृष्टि के आरम्भ से चलता आ रहा है (दूसरा पतरस ३:४)।

इसलिए, जब योचनान के शिष्यों ने यीशु से पूछा कि क्या वह अपेक्षित व्यक्ति था, तो उसने उसी समय कई लोगों को ठीक किया जो बीमारियों, बीमारियों और बुरी आत्माओं से पीड़ित थे, और कई अंधे लोगों को दृष्टि दी (लूका ७:२१)।

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 6

सप्ताह बीत गए. माचेरस से गलील तक की यात्रा केवल चार दिन की थी। यूहन्ना ने नाज़रीन की प्रतिक्रिया के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हुए प्रार्थना की। अंततः, उन्होंने अपने कक्ष के दरवाजे पर अपने शिष्यों की बात सुनी। वे येशुआ से एक बहुत ही विशिष्ट संदेश लेकर लौटे थे। यूहन्ना बड़ी मुश्किल से खुद को रोक सका। उसने क्या कहा? उन्होंने उत्तर दिया: यीशु ने हमें वापस जाने और जो कुछ तुमने देखा और सुना है उसे यूहन्ना को बताने के लिए कहा: अंधों को दृष्टि मिलती है, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ वाले शुद्ध हो जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जीवित हो जाते हैं, और खुशखबरी है गरीबों के लिए घोषणा की गई (मत्ती ११:४-५; लूका ७:२२)। यह कोई डांट-फटकार नहीं थी, बल्कि उसकी असली पहचान की प्रेमपूर्ण पुष्टि थी (यशायाह ३५:५)। मसीह के चमत्कारों का उद्देश्य उनके मसीहाई दावों को प्रमाणित करना था (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)।

इसमें, येशुआ ने यूहन्ना के लाभ के लिए एक कोमल फटकार जोड़ी: धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर नहीं खाता (मत्ती ११:६; लूका ७:२३)। यह ऐसा था मानो वह हेराल्ड से कह रहा हो, “यदि तुम मेरी खुशी और शांति का आशीर्वाद पाना चाहते हो तो संदेह मत करो।” चेतावनी ने योचानन के प्रति मसीहा के सम्मान को कम नहीं किया, जैसा कि उसकी गवाही ने तुरंत दिखाया। जब यूहन्ना की मृत्यु हुई, तो उसके सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं थे और न ही हमारे पास होंगे। वह अब भी सोच रहा होगा कि पापियों का उद्धारकर्ता कब अपने राज्य में प्रवेश करेगा, दुष्टों का न्याय करेगा, और अपने लंबे समय से प्रतीक्षित धार्मिकता के शासन की शुरुआत करेगा। लेकिन उसे अब येशु कौन था, या उसकी अच्छाई, न्याय, संप्रभुता या बुद्धि के बारे में कोई संदेह नहीं था। वह जो कुछ भी नहीं समझता था उसे प्रभु के हाथों में छोड़ने के लिए संतुष्ट था, जो कि धन्य होने और ठोकर न खाने का रहस्य है।

यूहन्ना के शिष्यों के चले जाने के बाद, प्रभु ने भीड़ से योचनन के बारे में बात करना शुरू किया। उन्होंने बप्तिजक के महत्वपूर्ण संदेश को स्पष्ट करने के लिए भीड़ से कई संभावित प्रश्न पूछे। तुम जंगल में क्या देखने गये थे? हवा से लहराया हुआ नरकट? यीशु ने जिस नरकट का उल्लेख किया था वह पूर्वी नदी के किनारे आम था, जिसमें जॉर्डन भी शामिल था जहाँ यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया था। वे हल्के और लचीले थे, हर हवा के झोंके के साथ आगे-पीछे लहराते थे। लेकिन बपतिस्मा देने वाला ऐसा नहीं था – वह कभी नहीं डगमगाया। यदि नहीं, तो आप क्या देखने निकले थे? बढ़िया कपड़े पहने एक आदमी? नहीं, जो अच्छे कपड़े पहनते हैं वे राजाओं के महलों में हैं (मत्ती ११:७-८; लूका ७:२४-२५)। अच्छे कपड़े पहनने वाला कोमल व्यक्ति यूहन्ना की तरह जंगल में नहीं रहेगा (मत्ती ३:४)। उनकी जीवन-शैली आत्म-भोग और आत्म-केन्द्रितता के विरुद्ध एक प्रमाण थी। शारीरिक और प्रतीकात्मक रूप से उन्होंने यरूशलेम में फरीसी यहूदी धर्म के पाखंड और भ्रष्टाचार से बहुत दूर कपड़े पहने, खाया और रहते थे। उन्हें दुनिया की आसानी या मंजूरी में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

तो फिर आप क्या देखने निकले थे? एक भविष्यवक्ता? उस प्रश्न का उत्तर स्पष्टतः

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 7

हाँ था। अग्रदूत ने एक बड़ा और समर्पित अनुयायी विकसित कर लिया था और अधिकांश लोग वास्तव में उसे एक भविष्यवक्ता मानते थे (मत्ती १४:५, २१:२६)। भविष्यवाणी का कार्यालय मोशे के साथ शुरू हुआ और बेबीलोन की कैद तक बढ़ा, जिसके बाद ४०० वर्षों तक इज़राइल ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तक कोई भविष्यवक्ता नहीं किया। वह भविष्यवक्ताओं के मान्यवर, सबसे गतिशील, स्पष्टवादी, टकरावपूर्ण और शक्तिशाली प्रवक्ता यहोवा थे। अंतिम भविष्यवक्ता के रूप में, योचनान न केवल यह घोषणा करेगा कि अपेक्षित व्यक्ति आ रहा है बल्कि वह आ गया है। हां, मैं तुम से कहता हूं, और भविष्यद्वक्ता से भी बढ़कर (मत्ती ११:९; लूका ७:२६)।

यह वही है जिसके विषय में लिखा है, “मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजूंगा, जो तेरे आगे मार्ग तैयार करेगा” (मत्ती ११:१०; लूका ७:२७)। मलाकी ने इसे इस प्रकार कहा: मैं अपना दूत भेजूंगा, जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा। तब जिस यहोवा को तुम ढूंढ़ते हो वह अचानक अपने मन्दिर में आएगा; वाचा का दूत, जिसे तू चाहता है, आएगा,” स्वर्ग की स्वर्गदूतों की सेनाओं के यहोवा का यही कहना है (मलाकी ३:१)। यहां उद्धरण एक अंश का परिचय देता है जो स्पष्ट रूप से बताता है कि एलिय्याह भविष्यवक्ता प्रभु के आने वाले दिन, यानी न्याय के दिन से पहले आएगा (मलाकी ४:५)। यहूदी धर्म एलिय्याह से अपेक्षा करता है – जो कभी नहीं मरा लेकिन एक उग्र रथ में बवंडर द्वारा स्वर्ग में ले जाया गया (दूसरा राजा २:११) – मसीहा से पहले। वास्तव में, यहूदियों ने प्रत्येक फसह सेडर पर अपने घर में उनका स्वागत करने के लिए एक स्थान निर्धारित किया है।

मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं हुआ (मत्ती ११:११क)। यीशु क्या कह रहे थे? क्या वाप्तिस्मा देने वाला इब्राहीम से बड़ा था? मूसा? और डेविड? हाँ! हमारे पास यूहन्ना के पूरे मंत्रालय का रिकॉर्ड नहीं है क्योंकि चार सुसमाचार मसीहा पर ध्यान केंद्रित करते हैं न कि उनके अग्रदूत पर। हम जानते हैं कि योचनान का न केवल देश में, बल्कि देश के बाहर भी जबरदस्त प्रभाव था। प्रेरितों में, पॉल उन लोगों के एक समूह से मिलता है जो यूहन्ना के शिष्य थे। उन्होंने यह भी नहीं सुना था कि यीशु घटनास्थल पर आये थे (प्रेरितों १९:१-७)। वास्तव में, वर्तमान सीरिया में ऐसे गाँव हैं जो अरामी भाषा बोलते हैं और अभी भी बपतिस्मा देने वाला को अपना पैगम्बर मानते हैं। इसलिए उनका प्रभाव सुसमाचार पढ़ने वाले किसी व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक था। लेकिन फिर यीशु हमें एक विरोधाभासी कथन देते हैं।

उन्होंने घोषणा की: फिर भी जो कोई स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा है, वह उससे बड़ा है (मत्ती ११:११बी; लूका ७:२८)। जबकि यूहन्ना नबियों में सबसे महान है, ब्रिट चादाशाह में सबसे छोटे नबियों में से वह उससे भी बड़ा होगा (मत्ती १६:१८-१९)। यह हमें बताता है कि मसीह में होने की स्थिति (इफिसियों १:३-९) प्रेरितों २:१-४१ में चर्च के जन्म से पहले तानाख के धर्मी होने की स्थिति से अधिक है। इसलिए, नई वाचा का सबसे छोटा विश्वासि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला से भी बड़ा

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 8

है।

यीशु ने कहा: जब से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने अपना मंत्रालय शुरू किया तब से लेकर अब तक (जो अपेक्षाकृत कम समय था, शायद अठारह महीने), स्वर्ग का राज्य हिंसक विरोध के अधीन रहा है (मत्ती ११:१२)। जैसे ही मेशियाक प्रकट होने के लिए तैयार हुआ, इज़राइल के दिल और आत्मा पर एक तीव्र आध्यात्मिक लड़ाई छिड़ गई थी। वह जहां भी गए, संघर्ष उत्पन्न किया, क्योंकि उनके संदेश ने यथास्थिति को बिगाड़ दिया, इसलिए राज्य ईश्वरविहीन, पापपूर्ण सांसारिक व्यवस्था के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ा, जिसने इसका विरोध किया।

परमेश्वर के सभी पिछले रहस्योद्घाटन हेराल्ड के साथ समाप्त हुए, क्योंकि यूहन्ना तक सभी पैगंबरों और टोरा ने भविष्यवाणी की थी (मत्ती ११:१३; लूका १६:१६ ए)। यूहन्ना टोरा और सभी पैगंबरों का हिस्सा था, फिर भी वह सुसमाचार की शुरुआत भी है। आप कह सकते हैं कि उसका एक पैर तनाख में और एक पैर ब्रित चदाशाह में है।

लेकिन उस समय से, परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार, जो अभी तक नहीं आया है, सीधे प्रचार किया जा रहा है, पहले अग्रदूत द्वारा (मत्ती ३:१-२) और अब येशुआ द्वारा (मत्ती ४:१७; मरकुस १: १५), जिसके परिणामस्वरूप हर कोई इसमें जबरदस्ती प्रवेश कर रहा है (लूका १६:१६बी)। यह राज्य में प्रवेश करने के लिए व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले भावुक निर्णय पर जोर देता है। इसलिए, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला वादे की उम्र और पूर्ति की उम्र के बीच एक संक्रमणकालीन व्यक्ति था। वह भविष्यवक्ताओं में से अंतिम था, और टोरा की व्यवस्था उसके साथ समाप्त हो गई। फिर हमारे पास यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और एलिय्याह के बारे में एक और कथन है।

पहले, यीशु ने कहा था कि यूहन्ना एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में आया था। परन्तु यूहन्ना ने स्वतंत्र रूप से यह स्वीकार करते हुए कि वह वही था जिसने प्रभु के लिए मार्ग तैयार किया था, उसने दृढ़तापूर्वक इस बात से इनकार किया कि वह एलिय्याह था (यूहन्ना १:२१-२३)। परन्तु अब यीशु ने कहा: और यदि तुम इसे स्वीकार करने को तैयार हो, तो वह एलिय्याह है जो आने वाला था। प्रभु यह कह रहे थे कि यदि मसीहा को राजा के रूप में स्वीकार किया गया था, और यदि राज्य प्राप्त हुआ था, तो यूहन्ना ने सभी चीजों को बहाल करने के लिए एलिय्याह के कार्य को पूरा किया होगा: देखो, मैं उस महान और भयानक दिन से पहले तुम्हारे पास पैगंबर एलिय्याह को भेजूंगा यहोवा आता है. वह पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और उनके पुत्रों के मन को उनके पिता की ओर फेर देगा; अन्यथा मैं महान क्लेश के दौरान आऊंगा और भूमि पर शाप डालूंगा (मलाकी ४:५-६)। लेकिन चूँकि मसीहाई राज्य को अस्वीकार कर दिया गया था, यूहन्ना ने एलिय्याह के कार्य को पूरा नहीं किया। परिणामस्वरूप, एलिय्याह स्वयं किसी दिन उस कार्य को पूरा करने के लिए वापस आएगा (प्रकाशितवाक्य Bw पर मेरी टिप्पणी देखें – मैं प्रभु के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले आपके लिए पैगंबर एलिय्याह को भेजूंगा)। जिसके कान हों वह सुन ले (मत्ती ११:१४-१५)

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 9

हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं था कि यूहन्ना का मंत्रालय विफल था। एक बार ज्ञात हो जाने पर उसने लोगों को मसीहा को स्वीकार करने के लिए तैयार किया। जिन लोगों को योचानान ने बपतिस्मा दिया था, वे यूहन्ना द्वारा मसीहा के रूप में बताए गए किसी भी व्यक्ति पर विश्वास करने की प्रतिबद्धता जता रहे थे। यूहन्ना इसमें सफल रहे. सभी लोगों ने, यहाँ तक कि महसूल लेने वालों ने भी, जब यीशु के शब्द सुने, तो उन्होंने स्वीकार किया कि परमेश्वर का मार्ग सही था, क्योंकि उन्हें यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया था (लूका ७:२९)। जिन आम लोगों ने यूहन्ना के संदेश पर विश्वास किया था, उन्हें यीशु को मेशियाक के रूप में विश्वास करने में कोई परेशानी नहीं हुई।

लेकिन यहूदी नेतृत्व, फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने, यूहन्ना के संदेश और अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया था। हम यह जानते हैं क्योंकि विसर्जन करने वाले ने उन्हें बपतिस्मा नहीं दिया था (लूका ७:३०)। इसलिए यूहन्ना के पश्चाताप के बपतिस्मा को अस्वीकार करके उन्होंने उनके और इस्राएल राष्ट्र के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया।

यीशु ने उन फरीसियों का वर्णन किया जिन्होंने यूहन्ना को बच्चों के रूप में अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने आगे कहा: तो फिर, मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे कर सकता हूँ? रब्बियों ने किसी दृष्टांत, सादृश्य या कहानी को प्रस्तुत करने के लिए कई अभिव्यक्तियों का उपयोग किया, जैसे “मामला कैसा है?” या “मैं इस बात को कैसे स्पष्ट कर सकता हूँ?” जिन लोगों ने खुशखबरी पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, उन्होंने अपने अविश्वास को आलोचना से ढक दिया। तो उस रब्बी परंपरा में, येशुआ ने यह कहकर अपनी बात स्पष्ट की: वे बाज़ारों में बैठे बच्चों की तरह हैं और दूसरों को पुकार रहे हैं (मत्ती ११:१६; लूका ७:३१-३२ए)? वे विद्रोही बच्चों की तरह थे जो अपने तरीके से चलने पर जोर देते थे।

बाज़ार शहरों या कस्बों का एक केंद्रीय क्षेत्र था जहाँ लोग खरीदारी करते थे या मेलजोल करते थे। सप्ताह के कुछ निश्चित दिनों में, किसान, शिल्पकार और व्यापारी अपनी उपज या माल बेचने के लिए लाते थे। बच्चे तब खेलते थे जब उनके माता-पिता खरीदारी करते, बेचते या भ्रमण करते थे। दो खेल, “शादी” और “अंतिम संस्कार” विशेष रूप से लोकप्रिय थे। चूँकि शादियाँ और अंत्येष्टि दो प्रमुख सामाजिक कार्यक्रम थे, बच्चों को उनकी नकल करना पसंद था। शादियों में उत्सव संगीत और नृत्य शामिल होता था, और जब बच्चे “शादी का खेल” खेलते थे तो वे उम्मीद करते थे कि काल्पनिक बांसुरी बजने पर हर कोई नाचेगा, ठीक वैसे ही जैसे बड़े लोग वास्तविक शादी में करते थे। इसी तरह, जब उन्होंने “अंतिम संस्कार का खेल” खेला तो उन्हें उम्मीद थी कि जब काल्पनिक मातम खेला जाएगा तो हर कोई शोक मनाएगा, ठीक वैसे ही जैसे भुगतान किए गए शोक मनाने वालों ने वास्तविक अंतिम संस्कार में किया था।

लेकिन हमेशा विद्रोही लोग होते थे, जो बाकी बच्चों के साथ जाने से इनकार कर देते

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 10

थे। हमने ख़ुशनुमा संगीत बनाया, लेकिन आप नाचेंगे नहीं! हमने दुखद संगीत बनाया, परन्तु तुम रोओगे नहीं” (मत्ती ११:१७; लूका ७:३२ सीजेबी)। यदि खेल “शादी” था, तो वे “अंतिम संस्कार” खेलना चाहते थे; यदि खेल “अंतिम संस्कार” था, तो वे “शादी” खेलना चाहते थे। दूसरे बच्चों का कोई भी कार्य उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका। वे शिकायतकर्ता थे जिन्होंने सब कुछ बर्बाद कर दिया। अविश्वास के लिए कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होते।

यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला के प्रति राष्ट्र की प्रतिक्रिया का पहला उदाहरण लागू किया। क्योंकि जब योहानान न कुछ खाता और न दाखमधु पीता हुआ आया, तो उन्होंने कहा; उस में दुष्टात्मा है। (मत्ती ११:१८; लूका ७:३३) फ़रीसी यहूदी धर्म के लिए, यूहन्ना की जीवनशैली एक अंतिम संस्कार की तरह थी। वह उनकी अनैतिक भावनाओं से चिढ़ गया, इसलिए अंततः उन्होंने उसे मार डाला। उन्होंने कुछ समय तक उसे बर्दाश्त किया, लेकिन उसने उन्हें बाड़ पर बैठने और तटस्थ दर्शक बने रहने नहीं दिया। इस प्रकार जब उन्हें चुनना पड़ा, तो उन्होंने उस पर विश्वास न करने का निर्णय लिया। अपने पापों के बारे में हेराल्ड की फटकार को स्वीकार करने के बजाय, उन्होंने उसकी धार्मिकता को धिक्कारा। शैतान का आधिपत्य यूहन्ना को अस्वीकार करने का कारण बताया गया था; हालाँकि, उनकी अस्वीकृति का वास्तविक कारण यह था कि उन्होंने फरीसी यहूदी धर्म और मौखिक कानून को अस्वीकार कर दिया था (Ei – मौखिक कानून देखें)। याद रखें, जो दूत के साथ हुआ वही राजा के साथ भी होगा।

मसीहा ने फरीसियों की स्वयं के प्रति प्रतिक्रिया के लिए दूसरा दृष्टांत लागू किया। यूहन्ना के विपरीत, उपवास या शराब से परहेज़ यीशु की जीवनशैली की विशेषता नहीं थी। वास्तव में, योचनान की तपस्वी जीवन शैली के विपरीत, येशुआ ने सभी सामान्य सामाजिक गतिविधियों में पूरी तरह से भाग लिया। फिर भी उसे यूहन्ना के समान ही दानव के कब्जे के आधार पर खारिज कर दिया जाएगा (Ek देखें – यह केवल राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है)। प्रभु विवाह की स्थिति में रहते थे (मत्ती ९:१४-१५) और कहा: मनुष्य का पुत्र, खाता-पीता आया। हालाँकि, फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने उसकी सामान्य गतिविधियों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने में जल्दबाजी की, और उस पर पेटू और शराबी, चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र होने का आरोप लगाया (मत्ती ११:१९ ए; लूका ७:३४)।

सबसे पहले, यीशु और अधिकांश अन्य यहूदियों ने जो शराब पी थी, उसे खराब होने से बचाने और भंडारण को आसान बनाने के लिए ताजे अंगूर के रस को भारी चाशनी में उबालकर बनाया गया था। “वाइन” बनाने के लिए चाशनी की थोड़ी सी मात्रा में आवश्यकतानुसार पानी मिलाया जाएगा। यह अल्कोहल रहित था, और किण्वित करने पर भी यह नशीला नहीं था क्योंकि इसमें अधिकतर पानी था। इस प्रकार, वह शराबी नहीं था.

दूसरा, हाँ, वह कर वसूलनेवालों और पापियों का मित्र था, परन्तु उस अर्थ में नहीं

Ed – यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ने यीशु से प्रश्न किये
मत्ती ११:२-१९; लूका ७:१८-३५ और १६:१६ | 11

जैसा फरीसियों का था। उन्होंने इसका अर्थ यह निकालने की कोशिश की क्योंकि यीशु चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ जुड़ा था और वह भी उनके पाप में भागीदार था। सच्चाई से आगे कुछ भी नहीं हो सकता था। उन्होंने उनकी पापपूर्ण जीवनशैली में भाग नहीं लिया, इसके विपरीत, उन्हें इससे मुक्ति की पेशकश की (Cp – मत्ती की बुलावा देखें)।

येशुआ का कथन इस कथन में समाप्त होता है कि फरीसी यहूदी धर्म द्वारा यूहन्ना और यीशु को अस्वीकार करने के बावजूद, ज्ञान उसके सभी बच्चों द्वारा सही साबित हुआ है (मत्ती ११:१९ बी; लूका ७:३५)। बुद्धि, यहाँ, मानवकृत है और ईश्वर के मार्ग से मेल खाती है। परमेश्वर के ज्ञान के बच्चों की तुलना इस पीढ़ी के बच्चों से की जाती है (मत्ती ११:१६; लूका ७:३१)। परमेश्वर के ज्ञान की संतानों को उनके आध्यात्मिक फल (गलातियों ५:१३-२६) द्वारा स्पष्ट रूप से देखा जाएगा, और इस दूसरे दृष्टांत के विद्रोही बच्चों, फरीसी यहूदी धर्म, जिन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, को भी उनके आध्यात्मिक फल की कमी से स्पष्ट रूप से देखा जाएगा.

यह कितना दुखद है कि कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी धार्मिकता से इतनी मजबूती से चिपके हुए हैं कि वे यहोवा की कृपा के लिए बंद हैं। येशु सभी पुरुषों और महिलाओं को मुक्ति का शुभ समाचार देने आये। सुसमाचार उन लोगों के वृत्तांतों से भरे हुए हैं जिन्होंने प्रभु की खोज की और उनमें अपना विश्वास रखा। कोई भी निराश नहीं हुआ. हालाँकि, मसीहा ने स्वयं को उन लोगों तक ही सीमित नहीं रखा जो उसे खोजते थे। जब उनका सामना एक विधवा से हुआ जो अपने इकलौते बेटे को दफना रही थी, तो दुःखी व्यक्ति और स्वयं दुःख से परिचित (यशायाह ५३:३) करुणा से भर गया (देखें Db – यीशु ने एक विधवा के बेटे को उठाया)। यीशु ऊपर गए और उस ताबूत को छुआ जिस पर वे उसे ले जा रहे थे और चमत्कार करने वाले रब्बी ने लड़के को वापस जीवित कर दिया।

हाशेम से अनुग्रह प्राप्त करने के लिए बस इतना ही आवश्यक है कि हम उसकी सुनें और उस पर भरोसा करें। यदि हम ऐसा करेंगे तो बाकी काम वह करेगा। परमेश्वर यह देखकर अपनी कृपा का प्रमाण देगा कि हम फल उत्पन्न करते हैं। मुख्य चरवाहा उन लोगों को शामिल करता है जो उसकी आवाज़ सुनते हैं। और जो लोग ध्यान से सुनते हैं वे उनकी कृपा की शक्ति के कारण अपनी क्षमताओं से परे सफल होते हैं।

हमें यह जानकर खुशी हो सकती है कि पीड़ित सेवक हर किसी की तलाश करता है – यहां तक कि शक्तिशाली और अमीर लोगों द्वारा नजरअंदाज किए गए लोगों की भी। उन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया, बल्कि सभी पर अपनी दया और कृपा प्रदान की। आज भी, यहोवा हमारे आस-पास के लोगों को छूने की इच्छा रखता है। शुभ समाचार की आशा उनके लिये है। यदि हम रुआच हाकोडेश को सुनते हैं, तो वह हमें दिखाएगा कि सुसमाचार को अपने दोस्तों, पड़ोसियों और परिवार के सदस्यों के साथ कैसे साझा किया जाए। और, प्रभु उन लोगों पर अपनी दया और कृपा बरसाएंगे जो सुनते हैं और विश्वास करते हैं – क्योंकि उनकी वफादारी हमारी धार्मिकता पर निर्भर नहीं है, बल्कि उनकी धार्मिकता और बिना शर्त

[redacted] on [redacted] [redacted]

[redacted], [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] on [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], on [redacted] [redacted]